स्त्री विमर्श और मीरा

डॉ. पूनम सेठी

मुख्य बिंदु–स्त्री, विमर्श, भारतीय सामाजिक प्रतिमान, लैंगिक अवधारणा, मीरा- सहृदय भक्त, अनन्य प्रेमिका, निर्भीक, सामाजिक प्रतिमानों का नि-ेध, मीरा की विद्रोही चेतना।

स्त्री विमर्श मुख्य रूप से उत्तर आधुनिक युग का एक ऐसा वैचारिक नारी आंदोलन है जिसमें ज्ञान और अध्ययन के विभिन्न अनुशासनों में पारिवारिक, सामाजिक एवं रा-ट्रीय जीवन में स्त्री की उपस्थिति, प्रतिभागिता, सहयोग और उसके महत्व की विवेचना एवं स्थापनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। सम्पूर्ण इतिहास में पुरू-ो के द्वारा नारी के ृो-ाण, असमानता के विरूद्ध उठायी गयी आवाजों को फिर से सुनने और समझने की चे-टा की जा रही है। स्त्री विमर्श का आंदोलन पश्चिमी जगत से आया है लेकिन भारतीय परिस्थिति एवं परम्परा में स्त्रीत्व की छवियाँ विदेशी सन्दर्भों से भिन्न रही हैं। स्त्री आन्दोलन मुख्यतया पुरू-ाों के विरोध में नहीं है और न स्त्रियाँ पुरू-ा बनने का प्रयत्न कर रही हैं। डा. अनामिका का कथन है-

''स्त्री और पुरू-ा की लड़ाई का व्याकरण सामन्तों और आसामियों, पूंजीपतियों और मजदूरों, औपनिवेशिक ताकतों और ृोाि-तों के बीच की लड़ाई के व्याकरण से अलग है। स्त्री और पुरू-ाों के बीच की यह लड़ाई दो वर्गों, दो नस्लों, दो जातियों, दो दलों, दो रा-ट्रों के बीच की लड़ाइयों से तुलनीय नहीं है। सम्पन्न और विपन्न, ऊँच और नीच, ृासक और ृासित, गौरे और काले के बीच जो जंग छिड़ी है, उनमें प्रतिपक्षियों के हित-निकाय (इण्टरेस्ट ग्रुप) अलग-अलग हैं, इसलिए हार जीत वहाँ एक अलग ही मायने रखती है। लेकिन स्त्री और पुरू-ा की लड़ाई में दो पीढ़ियों के बीच की लड़ाई की तरह हित-निकाय अलग-अलग नहीं होते। दोनों का हित-निकाय एक ही होता है- परिवार।''[1]

स्त्री के संघ-ा में परिवार के हित की उपेक्षा भले ही न हो लेकिन उसका संघ-ा यहीं तक सीमित नहीं है। आज की स्त्री घर से बाहर निकलकर पुरू-ाों द्वारा किये जाने वाले उन सभी साहसिक एवं कठिन कामों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए बेचैन है। आज ृासन, प्रशासन, अनुसंधान, पुलिस, सेना आदि विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों की सशक्त भागीदारी हो रही है और अधिकाधिक होने की कोशिश की जा रही है लेकिन इस आंदोलन का मूलभूत बिन्दु पितृसत्तात्मक समाज में पल रहे पुरू-ाों को उस पूर्वाग्रह से मुक्त करना है जिसमें वह मानता है कि स्त्रियाँ उससे हीनतर हैं और दोनों के जीवन जीने के मापदण्ड, तरीके, आदर्श एवं मान्यताएँ और मूल्य अलग-अलग हैं। स्त्री विमर्श में एक प्रकार से अनुचित रूप से स्त्रियों के ऊपर थोपे गये कृत्रिम आदर्शों और बंधनों से मुक्ति का आग्रह प्रमुख है। स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में यदि मीरा के काव्य का मूल्यांकन किया जाये तो बहुत से सकारात्मक सूत्र मिल सकते हैं।

स्त्री विमर्श के कई पहलू मीरा के काव्य और जीवन ृौली से उद्घाटित होते हैं। राजघराने की स्त्रियों की मनोदशा और उनका घुटन भरा जीवन सदैव परदे और प्रासादों की प्राचीरों के भीतर ही रहा, मीरा

ने अपने काव्य में अपनी मनःस्थिति, महलों की वर्जनाओं एवं भक्ति के उद्धेग को पूरी तरह अनावृत्त किया है। यह अनावरण महिला अध्ययन का महत्वपूर्ण लक्ष्य रहा है। स्त्री विमर्श में सर्वप्रथम स्त्रियों की गतिविधियों और उनके योगदान की अदृश्यता को चिन्ता का वि-ाय माना है। 1970 से 1980 के दशक में महिला अध्ययन केन्द्रों द्वारा स्त्रियों की अदृश्यता को उजागर करने के गम्भीर प्रयास किए गये। प्रस्तुत लेख में स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में मीरा के जीवन एवं लेखन का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

स्त्रियों और पुरू-ों के बीच कार्य विभाजन का **लैंगिक अवधारणा** पर प्रभाव पड़ा है। स्त्री-पुरू-ों के बीच वैयक्तिक एवं सार्वजनिक कार्यक्षेत्रों के विभाजन के कारण स्त्रियाँ मुख्य धारा में हाशिए पर रही हैं। वास्तव में, इस रूढ़िगत अवधारणा के कारण स्त्रियों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की कमी रही और वे स्वयं को गौण व हीन समझती रहीं। उन्होंने घर की लक्ष्मण रेखा को अपनी स्वन्तत्रता की सीमा मान लिया। फलस्वरूप पौरू-ा और स्त्रीत्व की अवधारणा का अन्तर गहरा होता गया। कालान्तर में यही स्त्रियों की परिस्थिति और दशा या दुर्दशा का कारण भी बनी। उनकी प्रतिभा क्षमता व योग्यता पर सदैव प्रश्नचिन्ह लगते रहे। वे कभी-कभी उत्सव, सामाजिक, धार्मिक अनु-ठान और विवाह आदि के आयोजनों से जुड़ी रही किन्तु सार्वजनिक क्षेत्र उनके लिए वर्जित रहे। मध्यम वर्ग, विशे-ा रूप से कुलीन व ृशासकीय वर्ग और राज प्रासादों की स्त्रियों के लिए ये विभाजन रेखाएँ गहरी और घुटन पैदा करने वाली थीं। तथाकथित निम्न वर्ग की स्त्रियों की तरह वे सार्वजनिक उत्सवों और मेलों में भाग नहीं ले सकती थीं। इन वर्जनाओं को मीरा ने चुनौती दी और अपनी राह स्वयं चुनी जिसके लिए उन्हें पग-पग पर संघर्-ा करना पड़ा।

स्त्रियों से सम्बन्धित कई प्रतिमान भारतीय सामाजिक परम्परा में ृताब्दियों से स्थापित हैं। स्त्रियों के आदर्शों और सामाजीकरण में इनका महत्व दीर्घ काल से चला आ रहा है। भारतीय समाज में स्त्री की समर्पित पत्नी वाली छवि और स्वेच्छा से त्याग करने को तत्पर वात्सल्यमयी मातृछवि को ही सर्वाधिक प्रधानता दी गयी है। पतिव्रता स्त्री के आदर्श के साथ ही सहनशीलता, त्याग और धैर्य जैसे गुणों को स्त्री धर्म की अनिवार्य विशे-ताएँ माना गया है। पतिव्रता स्त्री से पति और उसके परिवार के प्रति पूर्ण समर्पण, सेवा और त्याग की अपेक्षा की जाती थी और आज भी की जाती है। वैधव्य स्त्री जीवन के लिए अभिशाप था और पति के साथ जलकर दहन जीवन का भयावह अन्त। समाज में प्रचलित इन्हीं प्रतिमानों और आदर्शों के फलस्वरूप स्त्री की स्वतंत्रता को नियंत्रित किया गया। राजपूत स्त्रियों के लिए यह आचार संहिता अन्य वर्गों की अपेक्षा कठोर थी। मीरा के काव्य में इन सामाजिक प्रतिमानों के प्रति विद्रोह के स्वर विद्यमान हैं।

स्त्री विमर्श के प्रसंग में स्त्री-लेखन के सम्बन्ध में प्रभाखेतान का मत है कि 'अपने लेखन में स्त्री अपने भीतर के भय को जीत ले, लोग क्या कहेंगे, घरवाले नाराज होंगे, बवंडर होगा, इन ख्यालों से वह निजात पा लें।' प्रभा खेतान को 21वीं ृती में भी सभी लेखिकाओं को यह सलाह देने की आवश्यकता महसूस हुई। जबकि मीरा ने 16वीं ृती के सामंती मेवाड़ में निर्भीक होकर स्वयं अपने निर्णय लिए और अपने साहित्य में उन्हें खुलकर उजागर किया।

''मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई'' गीत की अमर गायिका मीरा एक सह्रदय भक्त कवयित्री हैं। हिंदी भक्ति-काव्य में 'गिरधर गोपाल' से अनन्य प्रेम करने वाली मीरा का महत्वपूर्ण स्थान है। आज समस्त विश्व में जब स्त्री विमर्श के स्वर साहित्य, समाज, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में मुखरित हो रहे हैं, स्त्री अपनी पहचान व अस्तित्व के लिए सचेत व जागरूक हो रही है, तो हम देखते हैं कि आज से व-ाों पूर्व मीरा के काव्य में स्त्री विमर्श की सशक्त अभिव्यक्ति दिखाई देती है। समाजिक रूप से पतनशील मध्यकाल में मीरा ही अकेली ऐसी हैं जिन्होंने व्यक्ति स्वातंय का आह्वाहन कर सामाजिक रूढ़ियों और गलत मान्यताओं को तिलाजंलि देने का अद्भुत साहस किया। मीरा ने अपने काव्य के माध्यम से समाज को निर्भीकता, निडरता, दृढ़ विश्वास, एकनि-ठ प्रेम व नारी स्वातंय जैसे उत्कृ:ट जीवन-मूल्य भेंट किए।

मीरा न केवल महिला भक्तों मे अद्वितीय थीं बल्कि पर्दाप्रथा रूपी लोकलाज को दूर कर, सती न होकर, मंदिरों में नृत्य करके और राजाज्ञाओं का नि-ोध करके उन्होंने निडर और निर्भय होकर मध्यकालीन पुरू-ा सत्तात्मक समाज में अपनी आस्थाओं के अनुसार प्रभु अराधना की और नारी पुरू-ा के आडम्बरपूर्ण भेदभाव को समाप्त कर दिया। परिवारजनों और राज व्यवस्था द्वारा मीरा की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के अनेक प्रयास हुए किन्तु मीरा अपने सिद्धांतो पर निडर व सुदृढ़ बनी रही। यहाँ तक कि उन्होंने निर्भयतापूर्वक नि:शंक भाव से गरल भी भगवान शिव की तरह पी लिया।

मीरा के काव्य में स्त्री चेतना की वह आवाज सुनाई देती है जो पराधीनता के बोझ से बेचैन और स्वाध ीनता की आकांक्षा से प्रेरित स्त्री की आवाज है जिसे आधुनिक युग में 'स्त्री चेतना' के नाम से जाना है। मीरा भारतीय स्त्री की अस्मिता का ऐसा प्रतीक है, जिसका स्वरूप आधुनिक चेतना से उपजा है और जिसकी रोशनी पाकर भारतीय स्त्री ही नहीं अपितु समूचा स्त्री मुक्ति आंदोलन राह पा सकता है। हम कह सकते हैं कि हिंदी के वास्तविक और सशक्त स्त्री काव्य का आरम्भ 'मीरा' से होता है। उनके स्वर में स्त्री स्वर की सामाजिक सजगता भक्ति आंदोलन की एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

मीरा ने अपने समय में, अपनी सीमाओं में रहकर जो किया उसे उस समय की बहुत बड़ी उपलब्धि ा कहा जा सकता है। चौदहवीं-पन्द्रवहीं ृाती भक्तिकाल की रही जहाँ सगुण व निर्गुण भक्ति धारा के कवि अपनी रचनाओं के द्वारा जन सामान्य को सहारा व दिशा प्रदान कर रहे थे। ऐसे समय में राजपरिवार की मीरा महलों से बाहर आकर कृ-ण भक्ति में सरोबार हो गई और सारा समाज मीरा का हो गया। राजनीतिक उथल-पुथल के विपरीत भक्तिधारा उमड़ पड़ी, जिससे जनभावनाओं को एक नई दिशा मिली। मीरा की भक्ति से समाज में एक चेतना पैदा हुई और स्त्री चेतना को एक नयी दिशा मिली।

मीरा मेड़ता राज्य के ृाासक राजा रतनसिंह की पुत्री थी। वै-णव सम्प्रदाय की परम्परा में उनका लालन-पालन हुआ। बचपन से ही कृ-ण भक्ति की ओर उनका झुकाव रहा। कहा जाता है कि मीरा ने बचपन में ही कृ-ण का वरण कर लिया था तथा उनकी मूर्ति वे सदैव अपने पास रखती थीं। मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्ये-ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ। प्रारम्भ से ही मीरा सामान्य

दाम्पत्य जीवन के आदर्शो और अपेक्षाओं की ओर उदासीन रहीं। कृ-ण भक्ति में तल्लीन मीरा ने राजघराने के नियमों की अवज्ञा की तथा कुलरीति की अवमानना करते हुए कुल देवी की पूजा-अर्चना से भी इंकार किया। भोजराज मीरा के प्रति सहि-णु और उदार थे। यहाँ तक कि मेवाड़ के राजघराने के ैव मतावलम्बी होते हुए भी उन्होंने मीरा के लिए वै-णव धर्मानुसार कृ-ण का मन्दिर बनवाया।

मीरा के इस व्यवहार के फलस्वरूप पारिवारिक अन्तरसम्बधों में तनाव और कटुता बढ़ती चली गई। मीरा को सबसे अधिक प्रताड़ित उनके पति भोजराज के भाई विक्रमादित्य ने किया। विक्रमादित्य ने मीरा पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगाये और उन पर अत्याचार किए। पर मीरा साहसपूर्वक कहती हैं कि वे राजा के आदेशों और महलों के अनुशासन की अनुपालना नहीं कर सकती हैं। राजसत्ता, पुरू-ावर्चस्व और समाजिक मर्यादाओं का विरोध मीरा के पदों में बार-बार अभिव्यक्त हुआ है। सत्ता के प्रतीक 'राणा' की अवहेलना करते हुए मीरा ने कई पद लिखे-

सिसोदियों रूढ़यों म्हारो कांई करलेसी
म्हे तो गुण गोविंद का गास्यां, हो माई।

(मीराबाई की पदावली)

नारी में स्वाभाविक लज्जा होती है, पर लज्जा भाव को समाज के द्वारा आवश्यकता से अधिक गरिमामण्डित किया गया। मीरा ने इस मिथ्या आरोपित लज्जा का परित्याग कर दिया जिससे वह लोकनिंदा से निर्भीक हो गयीं। ''लोक लाज व लोकनिंदा से निर्भय रहकर अपने द्वारा चुने गये मार्ग पर चलने और अपने द्वारा निर्णीत आचरण का अनुसरण करने और अपने समय के भक्ति आंदोलन से जुड़कर पुरू-ों के समकक्ष न केवल अपने लिए बल्कि सम्पूर्ण नारी समाज के लिए धार्मिक, सामाजिक अधिकार प्राप्त करने की पहल मीरा के द्वारा की गयी''[2]

राणा को चुनौती देते हुए मीरा एक पद में अपने आचरण के वि-ाय में स्प-ट करती हैं-

राणो जी थें जहर दियो म्हें जाणी।। टेक।।
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराँवाणी।
लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी।
अपने घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी।
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी।
सब सन्तन पर तन मन वारों, चरण कँवल लपटाणी।
मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपनी जाणी।।

(मीरा की पदावली)

इसी प्रकार मीरा पारिवारिक अनुशासन और अन्तर्सम्बन्धों की भी अवमानना करती हैं। वे कहती है कि वे सास, ननद के निर्देशों का पालन नहीं कर सकती-

सास लड़े नन्द खिझावै, राणा रह्या रिसाय,
पहरो भी राख्यौ चौकी बिठारयो, ताला दिया लगाय।

(मीरा की पदावली)

मीरा तथकथित राजमहलों की मर्यादा के बंधनों को तोड़ती हैं। वे महलों के अनुशासन और सुहागन स्त्री के प्रतीकों-टीकी,काजल, चुनरी, चूड़े आदि का परित्याग करती हैं। वे पतिव्रता स्त्री के सुहाग चिन्हों को छोड़ती हुई निःसंकोच कहती हैं-

गहणा गाँठी राणा हम सब त्यागा, त्यागो कर से चूड़ो
काजल टीकी हम सब त्यागा, त्यागो छै बांधन जूड़ो

(मीरा की पदावली)

परम्परा और रूढ़ियों से नारी समाज पुरू-ों की तुलना में अधिक बंधा रहता है। यदि कोई नारी इनके विरोध में खड़ी होती है तो सम्पूर्ण नारी समाज उसका विरोध करने में डंट जाता है। मीरा को उनकी सास, ननद तथा सहेलियाँ पारम्परिक मर्यादाओं के भीतर रहने की सीख देती रहती हैं, मीरा के आचरण की भरपूर निंदा भी करती हैं-

''सखी साइनि म्हारी हँसत है, हँसि-हँसि दे मोहि गारी, हे माय।
सास बुरी अर नणद हठीली, लरि लरि दे मोहिं तारी, हे माय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर बारी, हे माय।।''

(मीरा की पदावली)

''ऊदा और मीरा के संवाद (जो लोक-परम्परा से प्राप्त पद हैं) उनमें पारिवारिक स्तर पर जुड़ी महिलाओं की कटूक्तियों की ओर मीरा ने संकेत किया है। ऊदा ने मीरा को जाति की उत्कृःटता, सुख-सुविधाओं की उपलब्धता, खान-पान की प्रचुरता और संन्यासी जीवन की दुखदायी स्थितियों का जिक्र किया है लेकिन मीरा ने ऊदा की एक न सुनी और अपने संकल्प के प्रति प्रतिबद्ध रही।''[3]

इसके अतिरिक्त मीरा ने कार्यक्षेत्र की विभाजन रेखा को भी चुनौती दी। 16वीं ृाती में मीरा ने घर-बाहर की सीमाओं को अस्वीकार कर सार्वजनिक क्षेत्र में कदम रखा और संतो के साथ व्रज, वृदावंन व द्वारका तक की यात्राएँ कीं। इन सीमाओं को तोड़ने के कारण ही मीरा को विद्रोही कहा जाता है। इतना ही नहीं वे समाज की परवाह न करके रविदास को अपना गुरू बनाती हैं जो कि जाति से चमार थे। मीरा ने अपने गीतों में गुरू रविदास का कई बार बड़े गर्व के साथ उल्लेख किया है ''मीरां ने गुरू मिल्या छै रविदास, सुरंगा (स्वर्ग) से आयी पालकी।'' जब वे उनकी चेली बनने का अनुरोध करती हैं तो वे अपनी जाति का वास्ता देते हुए कहते हैं-

मीरांबाई म्हं तो जात रो चमार
तूं तो बडां घरां की डावड़ीं एजी

मीरा कहती हैं-

गुरू जी जाति-पांति रो कारण कोय नी'
बाई ने गुरू मिल्या ओ रविदास

मीरा की इस विद्रोही चेतना पर प्रकाश डालते हुए डा. प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं- ''घर-द्वार-कुल-समाज के बंधन तोड़कर सड़क पर उतरी, चमार को गुरू बनाती, जात-पात को ठेंगा दिखाती मीरा क्या पाँच सौ साल की बुढ़िया लगती है या आजकल की जवान छोरीघ उसने खुद तो अपने बंधन की श्रृंखला तोड़ी ही, ऊँच-नीच का जग-धंधा भी चौपट कर दिया। एक साथ स्त्री विमर्श और दलित विमर्श की बैठकी से कम नजारा नहीं है यह''। [4]

रविदास को गुरू बनाने के संदर्भ में श्रोत्रिय जी ने टिप्पणी की है ''मीरा ने संयोगवश नहीं, साभिप्राय रैदास को गुरू बनाया होगा, क्योंकि उसके भीतर की विद्रोही चेतना और बहती करूणा को अध्यात्म के क्षेत्र में इससे कम मंजूर न था।''[5]

इस प्रकार भक्ति के क्षेत्र में भी मीरा पृथक नजर आती हैं। भक्ति मार्ग में गुरू का जो महत्व है मीरा वहाँ भी अपनी राह स्वयं चुनती हैं। वे गुरू के सर्वोपरि प्रभाव में नहीं रहती और समय-समय पर अपने निर्णय स्वयं लेती हैं। उन्होंने बल्लभसम्प्रदाय के बल्लभाचार्य को भी गुरू माना किन्तु वे सम्प्रदाय की सदस्य नहीं बनी। यही कारण है कि 'चौरासी वै-णवों की वार्ता' में कई स्थानों पर मीरा की आलोचना की गई है। राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं की तरह धार्मिक क्षेत्र की व्यवस्थाओं में भी मीरा स्वतंत्र और अलग नजर आती हैं।

मीरा के साथ जो घटित हुआ उसकी अनुभूति केवल मीरा को ही नहीं हुई बल्कि व्यापक लोकमानस उससे संवेदित हुआ। फलस्वरूप मीरा के साथ हुए कटु व्यवहारों के आधार पर उन्हीं भावों की पुनरावृत्ति करते हुए लोक द्वारा मीरा भाव के पदों की सृ-टि हुई। मीरा ने अपने प्रेम की उल्लासमयी पीड़ा को संगीतमय पदों में इस तरह ढाला कि व्यापक लोकसमाज उनके साथ स्वर मिलाकर गा उठा। मीरा के गीतों के स्वर भारत के अनेक प्रदेशों में अलग-अलग धुनों में, अलग-अलग भा-ा में रूपान्तरित होकर गूंजने लगे। उनके पदों को ुभालक्ष्मी सहित अनेक ाास्त्रीय संगीतज्ञों ने गाया है। भजन मंडलियों में उनकी लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि भक्ति की परम्परा में उनका विशि-ट स्थान है। भक्त मीरा कालजयी हैं किन्तु साथ ही मीरा के विरोध के स्वर स्त्री विमर्श की चर्चा की दृ-टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। बाह्यय जगत में उन्होंने राजघराने, कुल, जाति, लैंगिकता के कई बन्धनों से मुक्त होने के लिए सतत प्रयास किये। निर्भीक मीरा ने अपनी राह स्वयं बनाई। समसामायिक परम्परागत स्त्री छवि से भिन्न उन्होंने स्वयं अपनी अलग पहचान बनाई। मीरा की इस स्त्री चेतना को रेखांकित करते हुए प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं-

''हाथ में तम्बूरा, दिल में प्रेम और कंठ में गीत लिए मीरा चलती-फिरती आग की लपट थी। आग जब क्षार (खार) को जलाती है तो जो भी क्षार है, सबको जलाती है। क्रांति की यह बड़ी परिभा-ा आज तक हमारी समझ में नहीं आयी। जब हाशिए पर पड़ी स्त्री स्वाधीनता की पुकार करती है तो हाशिए में जो भी पड़ा है उसकी आजादी मांगती है। लेकिन हमारा दलित और स्त्री-विमर्श परस्पर नहीं जुड़ सका, एक साथ खड़ा नहीं हुआ और अपने भीतर ही खण्ड-खण्ड हुआ पड़ा है जबकि मीरा के भीतर सम्पूर्ण स्त्री-समाज और सारे दलित साथ मिलकर अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं।''[6]

श्रोत्रिय जी के अनुसार मीरा की यह निर्भयता और दीवानगी एक तरह से नारी स्वातंय का ही नहीं, मनु-य की स्वाधीनता का ृांखनाद है। भले ही इसका केंन्द्र भक्ति हो, लेकिन उसमें सारे लक्षण आजादी के हैं। मीरा कृ-ण भक्ति साहित्य की प्रतिनिधि हैं। उनके काव्य से स्त्री काव्य की तीखी सुंगध आती है जो उन्हें भक्तिकाल के अन्य कवियों से अलग करती है।

मीरा की स्वातंत्रय चेतना, खुलकर विद्रोह करने की भावना और साहस हमें आज भी प्रभावित करते हैं। उनके समय में आज जैसे संचार माध्यम व नारी संगठन नहीं थे जिनमें सभी स्त्रियाँ मिलकर एक साथ अपने ृाो-ाण व दासता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर सकें। इसीलिए आज के समय में स्त्री विमर्श पर विचार करते हुए मीरा की स्त्री चेतना पर विचार करना नितान्त आवश्यक व प्रासंगिक है। मीरा मध्यकाल में स्त्री अस्मिता को प्रमाणित करने वाली यशस्वी स्त्री के रूप में प्रति-ठित है। उनके व्यक्तित्व में तत्कालीन नारी जाति की व्यथा और उसकी समस्याएँ अन्तर्निहित हैं। यही कारण है कि भक्त मीरा की तुलना में उनका रचनाकार रूप विराटतर हो गया है।

पं. गिरिमोहन गुरू ''नगरश्री'' मीरा की प्रशस्ती में लिखते हैं -

नारियों की ृाक्ति की पहचान है मीरा।
पीढ़ियों के लिए गौरव गान है मीरा।।
भाव की भीनी सुरभि से युक्त है-
भक्ति कानन का सुमन अम्लान है मीरा।
जो विरोधों में खड़ी सिर तानकर-
एक साहस की नई पहचान है मीरा
ऊर्जा नव ृाक्ति महिला वर्ग की-
हर एक युग की प्रेरणा है, प्राण है मीरा।

संदर्भ

अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, पृ. 10

मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली, (सम्पादक) राम किशोर ृार्मा, सुजीत कुमार ृार्मा पृ. 66

मीराबाई की सम्पूर्ण पदावली, परशुराम चतुर्वेदी, पद 38, पृ. 107

प्रभाकर श्रोत्रिय, कवि परम्परा, तुलसी से त्रिलोचन तक, पृ. 45

प्रभाकर श्रोत्रिय, कवि परम्परा, तुलसी से त्रिलोचन तक, पृ. 45

प्रभाकर श्रोत्रिय, कवि परम्परा, तुलसी से त्रिलोचन तक, पृ. 45

गिरिमोहन गुरू ''नगरश्री'', मीरायन, व-र्ा 9, अंक 3, सितम्बर 2015